International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
**Review Of Research**
**ISSN 2249-894X** **Impact Factor : 3.1402 (UIF)**
**Volume - 4 | Issue -8 | May - 2015** **Available online at www.ror.isrj.org**

# स्वामी विवेकानन्द व गांधी जी के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

**कविता रानी**
एम.ए.(समाजशास्त्र), यू.जी.सी.(नेट), वि.वि.परिसर,कुरुक्षेत्र वि.वि.,कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Short Profile :
Kavita Rani is a V . V . Complex, Kurukshetra Bt at Kurukshetra ( Haryana). She Has Completed M.A.( Sociology ) and U.G.C.( Net ).

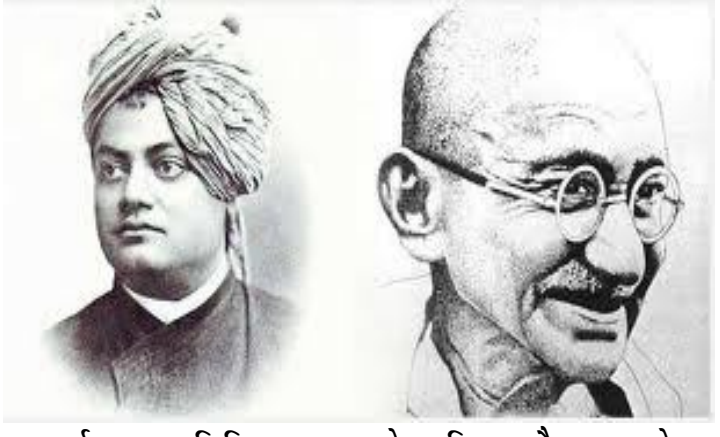

*सारांश :*
स्वामी जी व गाँधी जी दोनों ही भारतीय चिंतक है । इस लघु शोध में हमने दोनों चिंतकों के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन किया है । इसमें हमने दोनों चिंतकों के शैक्षिक विचारों का विस्तार वर्णन किया है । इसमें हमने समय की कमी के कारण इनके शैक्षिक दर्शन को लिया है तथा इसके लिए हमने ऐतिहासिक व वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया है । हमने आज के परिपेक्ष में इन दोनों संतों के शैक्षिक विचार का क्या योगदान हैं शिक्षा में इसका अध्ययन किया है । इसके लिए हमने पुस्तकों का सहारा लिया है ।

**Article Indexed in :**
DOAJ Google Scholar DRJI
BASE EBSCO Open J-Gate

*प्रस्तावना*

गाँधी जी व स्वामी जी अपने युग के महान व्यक्तित्व थे और इनके जीवन में अनेकों कठिनाईयाँ होने के बावजूद भी इन्होंने शैक्षिक व राजनैतिक क्षेत्र में बहुत अच्छा कार्य किया है । इन दोनों चिंतकों ने हमारी पुरातन संस्कृति के महत्व को पहचान कर उसको बनाये रखने के लिए अथक प्रयास किया है । तथा उसके अनुसार ही अपने शैक्षिक विचारों को संवारा है और हमारे सामने प्रस्तुत किया है । दोनों ही चिंतक भारतीय संस्कृति व सभ्यता को संभाल कर रखने वाले पुरोधा थे । राष्ट्र के लिए इन दोनों चिंतकों ने प्रेम, सत्य व सहयोग के आधार पर एक समुदाय के रूप में रहने की शिक्षा देकर नये समाज को बनाने का प्रयत्न किया है । इन दोनों चिंतकों ने अपने व्यस्त जीवन के दौरान हमारे देश में जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार करने का कार्य इन्होंने किया है । इन दोनों चिंतकों के शैक्षिक दर्शन में आध्यात्मिकता की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । इनके शिक्षा दर्शन का आधार भी हमारे पुराने ग्रन्थ रहे है। ये सभी प्राणीयों में आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते है । इन दोनों चिंतकों ने हमारे जन मानस के मस्तिष्क को गुलामी से छुटकारा पाने के लिए व अपने को उस परम तत्व के महत्व को जानने के लिए शिक्षा के विकास पर बल दिया है । इनके अनुसार शिक्षा भारतीय सिद्वांतों और आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए । इनके शिक्षा दर्शन में प्रकृतिवाद, आर्दशवाद व प्रयोजनवाद का अद्भुत समन्वय पाया जाता है । ये दोनों ही बालक के सम्पूर्ण विकास पर बल देते है और शिक्षक को उसका निर्देशक व मार्गदर्शक मानते हुए उसे इस प्रकार शिक्षित करने पर बल देते है कि उसको आत्मानुभूति हो सके ।

मार्जरी साइक्स ने लिखा है कि 'गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा के आधार पर आज देश में जिस शैक्षिक रीति-नीतियों का प्रतिपादन किया जा रहा है । वे वस्तुत अच्छी प्रणाली व शिक्षण विधि से संबंध रखती है और किसी भी अच्छे कहे जाने वाले विद्यालय के लिए अनिवार्य है । इस संबंध में एल. एन. गुप्त का कहना है -'यह सत्य है कि गाँधी जी ने अपने प्रयत्नों से शिक्षा-प्रणाली एवं शिक्षा की नीति में पुर्ननवीनीकरण ला दिया है । इससे देश की शिक्षा में एकरूपता आयी है । यह श्रेय गाँधी जी को ही देना चाहिए क्योंकि इससे शिक्षा की एक राष्ट्रीय रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है तथा देश की राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा बनायी गयी है । उधर स्वामी जी के बारे में भगिनी निवेदिता लिखती है कि 'स्वामी जी के जो भी शिक्षा संबंधी सुझाव रहे है । उनमें निहित शिक्षा तत्व के ठोस सिद्धांत ने सदैव मुझे चकित किया है । 'उधर पंडित नेहरू जी ने कहा है कि 'भारत के अतीत में अटल आस्था रखते हुए भारतीय विरासत पर गर्व करते हुए भी विवेकानन्द जी जीवन की समस्याओं की प्रकृति दृष्टिकोण आधुनिक था और वे भारत के अतीत व वर्तमान के बड़े सयोजक थे । उनका लक्ष्य समाज की सेवा करना तथा शिक्षा के माध्यम से जन शिक्षा, धार्मिक चेतना तथा सामाजिक जागरूकता को पैदा करना था । इन दोनों चिंतकों ने भारत के मुखमण्डल को रूपांतरित कर दिया । समूचे भारतीय जीवन में ताने-बाने को परिष्कृत किया । सहस्त्रों को एक अर्थपूर्ण जीवन जीने को प्रेरित किया । पश्चिमी गोलार्द्ध के सूख रखे चारागाहो को जलप्लावति करने के लिए भारतीय चिन्तन एवं संस्कृति के विशाल जल स्रोत को खोला तथा विज्ञान व आध्यात्मिक विश्वास तथा तर्क को तथा ज्ञान और कर्म को सामजस्यपूर्ण

ढंग से संश्लेषित किया उनके व्यक्तित्व में समस्त द्वन्द्वात्मक और परस्पर विरोधी विचार समस्वरता से संयुक्त हुए थे, जिसमें मानव को नया अर्थ प्राप्त हुआ और उसे सार्वभौमिकता तथा स्वीकृति की ताजा सुगन्ध प्रसारित हुई । इन दोनों चिंतको ने व्यवहारिकता पर अधिक बल दिया है । और यह कहां है कि जब हम आत्मनिर्भर नहीं होगे तो हमारे देश की तरक्की व हमारा स्वाभिमान जागृत नहीं हो सकता है । दोनों चिंतकों ने पाठ्यक्रम को भारतीय वातावरण के अनुकूल ढालने का प्रयत्न किया है । और इससे वे काफी हद तक कामयाब भी हुए है । शिक्षण विधियों पर जोर देते हुए कहते हैं कि वे ऐसी होनी चाहिए जो बालक की रूचि के अनुसार व उसके ज्ञान को बढ़ाने वाली हो तथा भारतीय वातावरण के अनुरूप हो । शिक्षक पर जोर देते हुए कहा है कि उसको सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिए तथा शिक्षार्थी अपने शिक्षकों के सम्मान करने वाले ब्रह्मचारी, सत्य, प्रेम व निर्भीक होने चाहिए और जो अपने जीवन को उच्चतम स्थिति तक ले जाते हुए समाज सेवा व देश सेवा कर सके और अनुशासन पर बोलते हुए कहा है कि ऐसा अनुशासन जो अन्दर से जागृत हो जिससे बाह्य दंड की आवश्यकता ही ना पड़े ।

दोनों ही चिंतको ने हमारे देश की शिक्षा को एक रास्ता दिखाया है क्योंकि इन दोनों चिंतकों ने जो हमारे पुरातन और अमर मूल्य है उन पर अधिक बल दिया है भारत ही नही वरन सम्पूर्ण विश्व स्तर पर मानव जाति आज के उपभोक्तावादी अर्थतंत्रीय युग में एक विखण्डित सत्य चेतना के खालीपन तथा उसे भरते अर्धसत्यों के नानारूपी तनावों के अपूर्व संकटकाल से गुजर रही है। आधुनिकता के प्रति विकल्पों को तलाश कर रही ऐसे संक्रांति काल में महात्मां गांधी और विवेकानन्द की प्रगासंगकिता को बड़ी तीव्रता से महसूस किया जा रहा है, गांधी जी के शैक्षिक दर्शन व कर्म से प्रभावित होकर कई नेता अपनें देशों का नेतृत्व कर चुके है जिससे दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति डा. नेल्सन मंडेला एवं म्याम्यार की नेता सुश्री आग सांग सू की भी शामिल है रिर्चड एटनबरो की फिल्म ''गांधी'' हो या द मैकिंग आफ महात्मा'' सभी की लोकप्रियता इस तथ्य की पुष्टि करते है इसी तरह विवेकानन्द जी नें भी शिक्षा के प्रयोग पक्ष पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। उन्होंने अपनें दार्शनिक व शैक्षिक विचारों को पूर्ण रूप देनें के लिये रामकृष्ण मिशन की स्थापना की और देश विदेशों में अपनी शाखायें खोली और उनके द्वारा जन सेवा व जन शिक्षा की व्यवस्था की उन्होंने देश के निर्बल व उपेक्षित व्यक्तियों पर विशेष ध्यान दिया है इन दोनों चिंतकों के सम्मुख जो चुनौती थी उसकी जटिलता, व्यापकता तथा जड़ता को नकारा नही जा सकता है दोनों नें ही सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता को स्वीकारा उसकी व्यापकता तथा समाग्रता को ही औचित्यपूर्ण माना पश्चिम के जो गलत विकल्प है उनको नकारते हुए भारतीय संदर्भानुकूल विकल्प देनें के प्रयास किये। भौतिकवादी संर्घषपूरक मशीनी एवं नैतिकता विहिन साधनों को अनावश्यक एवं हानिकारक मान कर गांधी जी अपनी प्रकिया नैतिक प्रतिकृति के अनुकूल बनाना चाहा मूलतः दोनों चिंतको नें आध्यात्मिकता से प्रेरित होकर समाज में सत्य, नैतिक साधन, न्यासिता, शांतिपूर्ण विकास की अवधारणा का निर्माण किया है इन दोनों संतो नें बालक की सवगिीण विकास के लिये जो सबसे अच्छा हो सकता है वह देनें की कोशिश की है तथा हमारे देश की शिक्षा में बहुत बड़ा योगदान दिया है उनके जीवन का लक्ष्य इस बात का प्रचार करना था कि सभी व्यक्तियों

मैं मानवीय गुणों का सर्वोतम विकास हो और आत्मा का ज्ञान प्राप्त करके वे दूसरों की भलाई करे यही थी उनकी इच्छा व आर्शीवाद।

## निष्कर्ष

दर्शन का अर्थ हैं ज्ञान के प्रति प्रेम अर्थात वे व्यक्ति जो ज्ञान के प्रति प्रेम रखते हैं तथा कभी भी संतुष्ट नही होते हैं दार्शनिक कहलाते हैं आज तक जितने भी शिक्षा शास्त्री हुए है वो दार्शनिक भी हुए हैं अतः शिक्षा व दर्शन का अटूट सम्बध हैं तथा ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं उन्हें अलग नहीं किया जा सकता हैं । दर्शन जीवन के उद्देश्य निर्धारित करता हैं जिनको शिक्षा के द्वारा पूर्ण किया जाता हैं । अतः शिक्षा के सभी पहलुओं पर दर्शन का प्रभाव पडता हैं ।

गांधी व स्वामी जी के शैक्षिक विचारो के तुलनात्मक अध्ययन मे पाया हैं कि दोनो ने आधयात्मिकता पर बल दिया हैं । नैतिक चरित्र पर बल दिया हैं । दोनेा के अनुसार शिक्षक एक दार्शनिक व निर्देशक हैं । इनके अनुसार शिक्षार्थी आज्ञाकारी ब्रहमचारी व श्रम करने वाला होना चाहिए । शिक्षण विधियों मे करके सीखना व अनुभव से सीखना आदि दी हैं । अनुशासन मे दोनो ने ही आत्मानुशासन की बात कही हैं । पाठ्यक्रम दोनो के अनुसार ही आधायात्मिक व भौतिक दोनो पाठ्यक्रमों होने चाहिए । दोनो ने ही नारी शिक्षा, समाज शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा पर काफी बल दिया है ।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य एवं त्रिपाठी, अन्य भारतीय दर्शन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1978।
2. एस. राधाकृष्ण महात्मा गांधी और सामाजिक न्याय, प्रकाशन गांधी स्मृति एवं दर्शन नई दिल्ली–11
3. गुप्त, राम बाबू भारतीय शिक्षा का इतिहास सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 1974 ।
4. गांधी, मोहनदास करमचंद, सत्याग्रह, गांधी साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1967 ।
5. पाठ्क, पी. डी., भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1977 ।
6. बालिया, जे. एस., शिक्षा के सिद्धांत तथा विधिया, पाल पबिलशर्स, जालन्धर, 1984 ।
7. मिश्र, रमेश,: भारतीय दर्शन, हिन्दी समीति सूचना विभाग, लखनऊ, 1970 ।
8. मिश्र, आत्मानंद, भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1972 ।
9. लाल रमण बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक तथा समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, 1970–80 ।
10. लाल रमन बिहारी, शिक्षा सिद्धांत, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 1972–73 ।

11. शर्मा, मंजु, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, कामसिफल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 1990 ।

12. शर्मा, राम, गांधी मानव रूप मे, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 ।

13. शर्मा, रामनाथ, शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1982 ।